(1) यमक

भिन्नार्थक अथवा निरर्थक स्वर-व्यञ्जन समुदाय की आवृत्ति को यमक कहते हैं।

'लाटानुप्रास' के शब्द और अर्थ — दोनों एक रहते हैं। यमक में केवल शब्दों में ही एकरूपता रहती है, अर्थों का सर्वथा भिन्न रहना आवश्यक है। बिहारी का यह दोहा उदाहरण रूप में लिया जा सकता है —

"वर जीते सर मैन के, ऐसे देखे मैं न
हरिनी के नैनान तें, हरि नीके ये नैन॥

'मैन' का अर्थ है मदन (काम) और दूसरे 'मैं न' का अर्थ है 'मैं न' अर्थात् कैंने नहीं। इस तरह उत्तरार्ध में बदले 'हरिनी के' का अर्थ है 'हरिणी से' और दूसरे 'हरि नीके' का अर्थ है हरि (कृष्ण का सम्बोधन) नीके (भले)

अतः लक्षण की संरचना ऐसी है कि 'मैन', 'मैं न' तथा हरिनी के, हरि नीके' दोनों में स्वर-व्यंजन समुदाय की क्रमशः आवृत्ति है और सभी सार्थक हैं, पर सबके अर्थ भिन्न-भिन्न हैं।

इस उदाहरण में केवल सार्थक वर्णों का सन्निवेश है।

" कैकी रव की नूपुर-ध्वनि सुन
जगती-जगती की मूक प्यास।"

यहाँ 'जगती' शब्द की आवृत्ति में यमक है। प्रथम 'जगती' क्रिया है और द्वितीय 'जगती' पृथ्वी का पर्याय। स्वरव्यंजन समुदाय की आवृत्ति तो है, पर दोनों शब्द भिन्नार्थक हैं।

दोनों की निरर्थकता का उदाहरण —

"सुमन चाप यही न अशोक से,
सुमन चाप-प्रदीपक हैं नये,
मधु-सुशोभित और रसाल भी,
न मद-कारक है न रसाल ही।"

प्रथम पद के 'सुमनचा' की दूसरे पाद के और तीसरे पाद के 'रसाल' की चौथे पाद में आवृत्ति है। यहाँ दोनों जगह 'सुमनचा', 'सुमनचा' में यमक है, पर दोनों ही दो शब्दों के खण्डभाग से निष्पन्न होते हैं। अतः दोनों निरर्थक हैं।